मेवाड़ में उच्च एवं तकनीकी शिक्षा पर दो दिवसीय नेशनल सेमिनार आयोजित

भारतीय संस्कारों को तकनीकी शिक्षा से जोड़े बिना विकास असंभव-डाॅ. अग्रवाल

- शिक्षा ऐसी जो करे बच्चों का सर्वांगीण विकास- डाॅ. गदिया

- उच्च शिक्षा का ग्राफ बढ़ाने के लिए चाहिएं 1500 नये विश्वविद्यालय- डाॅ. अलका

गाजियाबाद। भारतीय संस्कारों और नैतिक मूल्यों को तकनीकी शिक्षा से जोड़े बिना भारत की तरक्की असंभव है। मंगलम यूनिवर्सिटी के कुलाधिपति प्रोफेसर डाॅ. केके अग्रवाल ने ये विचार व्यक्त किये। वह वसुंधरा स्थित मेवाड़ ग्रुप आॅफ इंस्टीट्यूशंस के विवेकानंद सभागार में आयोजित नेशनल सेमिनार में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे।

'उच्च एवं तकनीकी शिक्षा की भारत में निर्माण की ज़रूरतें' विषय पर उन्होंने कहा कि भारत शिखर पर पहुंचने के सपने देख रहा है मगर इसका आधार क्या है, पता नहीं। यह सच है कि अपनी जमीन और संस्कृति से जुड़े बिना कोई देश शिखर पर नहीं पहुंच सकता। उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार योजनाएं तो बहुत बना रही है मगर इनके अभी मूलभूत क्रियान्वयन की जरूरत है। हालत यह है कि भारतवासी सपने तो अपनी भाषा में देखता है मगर तरक्की अंग्रेजी में करना चाहता है। उन्होंने कहा कि अच्छी शिक्षा न मिल पाने के कारण बच्चे इंजीनियर बनने के सपने पाले ही रह जाते हैं। उन्हें शिक्षा के लिए अच्छे काॅलेज व शिक्षक नहीं मिलते, यही कारण है कि देश में आज इंजीनियरिंग काॅलेजों में सीटें खाली पड़ी हुईहैं। हमारे देश की शिक्षा पद्धति इतनी लचर है कि बच्चे की 90 प्रतिशत सृजनशीलता नष्ट हो जाती है। हमें आंख और कान खुले रखने होंगे। निरंतर इस ओर सोचना होगा, समाज की भलाई के लिए प्रयास तेज करने होंगे, तभी शिक्षा का विकास संभव हो सकेगा।

मेवाड़ विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डाॅ. अशोक कुमार गदिया ने कहा कि हम भविष्य की चिंता में बेसिक चीजें ठीक नहीं कर पा रहे। 70 करोड़ युवाओं के लिए कोई अच्छी शिक्षा पद्धति हम आज तक नहीं बना सके। हमें आज ऐसी शिक्षा की जरूरत है जो बच्चे का सर्वांगीण विकास कर सके। शिक्षापरक व रोजगारपरक शिक्षा पद्धति आज देश के नौजवानों को चाहिए। हम दूसरे देशों की नकल करने के चक्कर में अपने मूल से भटक रहे हैं। उन्होंने कहा कि नीति निर्धारक बच्चों के भविष्य के साथ खिलवाड़ न करें। जरूरत व उनकी अपेक्षा के मुताबिक शिक्षा पद्धति तैयार की जाए। जो अविष्कार गांव-देहात में हो रहे हैं, उन्हें देखें और उन लोगों को बढ़ावा दें जो वास्तव में मेक इन इंडिया के सपने को साकार करने में जुटे हैं।

मेवाड़ ग्रुप आॅफ इंस्टीट्यूशंस की निदेशिका डाॅ. अलका अग्रवाल ने कहा कि मैकाले की शिक्षा पद्धति को बदलना होगा। हमें अपनी भाषा में ही विकास करने की जरूरत है। भारत में उच्च शिक्षा केवल 13 प्रतिशत है। विदेशों से मुकाबला करने और 15 प्रतिशत तक उच्च शिक्षा का ग्राफ बढ़ाने के लिए हमें 1500 नये विश्वविद्यालय पूरे देश में खोलने होंगे। हमें अपने पाठ्यक्रमों में भी बदलाव लाने की आवश्यकता है। कर्नल टीपीएस त्यागी, डाॅ. ब्रज भूषण आदि ने भी उच्च व तकनीकी शिक्षा को जमीनी तौर पर अमल में लाने की बात पर जोर दिया।

इंस्टीट्यूट आॅफ इंजीनियर्स गाजियाबाद स्थानीय केन्द्र के चेयरमैन डाॅ. हरिशंकर शर्मा ने इससे पूर्व विषय सम्बंधी जानकारी सबको दी। अतिथियों को गुलदस्ते व स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। चार सत्रों में चली सेमिनार में पांच विद्यार्थियों समेत कुल 32 विद्वानों ने विषय सम्बंधी रिसर्च पेपर पढ़े। सभी को स्मृति चिह्न व प्रमाण पत्र प्रदान किये गये। सेमिनार मेवाड़ विश्वविद्यालय, मेवाड़ ग्रुप आॅफ इंस्टीट्यूशंस, इंस्टीट्यूशन आॅफ इंजीनियर्स गाजियाबाद स्थानीय केन्द्र व राष्ट्रीय भाषा विकास कमेटी की ओर से आयोजित किया गया। इंस्टीट्यूशन आॅफ इंजीनियर्स के समन्वयक डाॅ. आरके सिंह ने सेमिनार का कुशल संचालन किया।

ऑल इंडिया सेमिनार

उच्च एवं तकनीकी शिक्षा की भारत में निर्माण की ज़रूरतें

(रचनात्मक मन के निर्माण के लिये शिक्षा)

दिनांक : 12 व 13 अक्टूबर 2017, **समय :** प्रातः 9:00 बजे

स्थान : मेवाड़ इन्स्टीट्यूट सेक्टर–4सी, वसुन्धरा, ग़ाज़ियाबाद

आयोजक

मेवाड़ इंस्टीट्यूट
एवं
मेवाड़ विश्वविद्यालय

दि इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (भारत)
ग़ाज़ियाबाद स्थानीय केन्द्र
राष्ट्रीय भाषा विकास कमेटी, आई.ई.आई. ग़ाज़ियाबाद

ऑल इंडिया सेमिनार

MEWAR